Date D. El. Ed II sem 2019-2021 (1)
22/06/20 सामाजिक अध्ययन

वर्धन वंश (हर्ष वर्धन) पुष्यभूति वंश
(Vardhan Dynasty (Harsh Vardhan)

गुप्त वंश के पतन के बाद जिन नये राजवंशों का उद्भव हुआ उनमें मैत्रक, मौखरि, पुष्यभूति परवर्ती गुप्त और गौड़ प्रमुख हैं इन राजवंशों में पुष्यभूति वंश के शासकों ने सबसे विशाल साम्राज्य स्थापित किया

→ पुष्यभूति वंश के संस्थापक पुष्यभूति था। इनकी राजधानी थानेश्वर (हरियाणा प्रांत के करनाल जिले में स्थित वर्तमान थानेसर नामक स्थान) थी।

→ बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित में पुष्यभूति को वर्धन वंश का आदि पुरुष अर्थात वर्धन वंश का जनक माना गया है। हर्षवर्धन के पिता का नाम प्रभाकरवर्धन था जो कि इस वंश के प्रथम शक्तिशाली राजा थे। राज्यवर्धन तथा हर्षवर्धन प्रभाकरवर्धन के पुत्र थे तथा

(3)

शशांक ने धोखे से ~~हत्या~~ उसकी हत्या कर दी।

→ शशांक शैव धर्म का अनुयायी था। इसने बोधिवृक्ष (बोधगया) को कटवा दिया।

→ राज्यवर्द्धन की मृत्यु के बाद 606 ई. में 16 वर्ष की अवस्था में हर्षवर्द्धन थानेश्वर की गद्दी पर बैठा तात्कालिक घटनाओं के कारणवश हर्षवर्धन को अत्याधिक मानसिक चिन्ता थी बाणभट्ट की पुस्तक हर्षचरित के मुताबिक हर्षवर्धन राज्यवर्धन की मृत्यु की सूचना प्राप्त करते ही उसने महाप्रण किया कि कुछ ही दिनों में मैं हर्षवर्धन इस धरती को गौड़ो से विहीन कर दूंगा या फिर अपने पापी शरीर को अग्नि में झोंक दूंगा। उस समय उसकी दो प्रमुख समस्याएं थी —

(2) राज्यश्री की खोज के पश्चात शशांक से प्रतिशोध।

(2) भावी समय में कन्नौज के उत्तराधिकारी का प्रश्न

राज्य बनने के बाद हर्ष ने सर्वप्रथम अपनी बहन राज्यश्री की खोज की तथा उसकी सहमती से कन्नौज का भी शासक बन गया

हर्ष का विजय अभियान (Harsha's Victory campaign)

हर्ष की विजयों का वर्णन निम्नलिखित है—

(1) वल्लभी के शासक से युद्ध

(2) उत्तर भारत के अन्य

राजाओं पर विजय

(3) बंगाल के शासक से युद्ध

(4) दक्षिण के पुलकेशिन द्वितीय से युद्ध (620 ई०)

हर्ष वर्धन का शासन प्रबन्ध

(1) राजस्व व्यवस्था
(2) सैन्य प्रशासन

MISS DOLI
Asst. Professor

उनकी माता का नाम यशोमती था तथा उनके राज्यश्री नामक एक बहन थी। प्रभाकरवर्धन ने 'महाराजाधिराज' एवं परमभट्टारक जैसी सम्मान जनक उपाधियाँ धारण की।

→ प्रभाकरवर्धन की पत्नी यशोमती से दो पुत्र - राज्यवर्धन और हर्षवर्धन तथा एक कन्या राज्यश्री उत्पन्न हुई। राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि राजा ग्रहवर्मा के साथ हुआ।

हर्ष का जन्म 590 ई. में हुआ। राज्यवर्धन पिता की मृत्यु के पश्चात् ही थानेश्वर के सिंहासन पर बैठा। इसी दौरान बंगाल के शासक शशांक एवं मालवा के राजा देवगुप्त ने मिलकर कन्नौज पर आक्रमण कर ग्रहवर्मा की हत्या कर दी तथा राज्यश्री को बन्दी बना लिया। सूचना मिलते ही राज्यवर्धन कन्नौज की रक्षा के लिए गया किन्तु